पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद की आज के शिक्षा-दर्शन में प्रासंगिकता

डॉ. देश दीपक वर्मा

सहायक आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग, शक्ति स्मारक संस्थान दुल्हिनपुर,

बलरामपुर (उत्तर प्रदेश)

Email - vermadeshsss@gmail.com

सारांश :

भारतीय चिंतन परंपरा में शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन अथवा रोजगार प्राप्त करने का साधन नहीं माना गया है, बल्कि इसे व्यक्ति के सर्वांगीण विकास तथा समाज और राष्ट्र के निर्माण का महत्वपूर्ण माध्यम माना गया है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में विज्ञान, तकनीकी एवं व्यावसायिक दक्षताओं पर विशेष बल दिया जा रहा है, किंतु इसके साथ ही नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व, सांस्कृतिक चेतना और मानवीय संवेदनाओं के विकास की आवश्यकता भी निरंतर अनुभव की जा रही है। ऐसी स्थिति में भारतीय चिंतन परंपरा के उन विचारों की प्रासंगिकता बढ़ जाती है जो मनुष्य के समग्र विकास को शिक्षा का आधार मानते हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित 'एकात्म मानववाद' इसी प्रकार का एक भारतीय चिंतन है। 'एकात्म' का अर्थ है—समग्रता या एकीकरण। यह दर्शन व्यक्ति और समाज, मनुष्य और प्रकृति, तथा भौतिक और आध्यात्मिक जीवन को परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक मानता है।

दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि पूँजीवाद व्यक्ति की आर्थिक स्वतंत्रता पर और साम्यवाद वर्ग-संघर्ष व राज्य नियंत्रण पर अधिक बल देते हैं, जबकि दोनों में मनुष्य का समग्र स्वरूप पूर्ण रूप से सामने नहीं आता। इसके अनुसार मनुष्य केवल शरीर नहीं है; उसके विकास के लिए शरीर के साथ मन, बुद्धि और आत्मा का भी संतुलित विकास आवश्यक है। एकात्म मानववाद मनुष्य को केवल आर्थिक अथवा भौतिक आवश्यकताओं वाले प्राणी के रूप में नहीं देखता, बल्कि उसके शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के समन्वित विकास पर बल देता है। इसी कारण शिक्षा के क्षेत्र में एकात्म मानववाद को ऐसे दृष्टिकोण के रूप में देखा जा सकता है जो ज्ञान, कौशल, चरित्र, नैतिकता, संस्कृति और सामाजिक दायित्व को परस्पर जोड़ता है।

मुख्य शब्द : वर्तमान परिप्रेक्ष्य, विद्यार्थी, एकात्म मानववाद, परामर्श, समग्र प्रक्रिया, मार्गदर्शन ।

प्रस्तावना

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानववाद को भारतीय जीवन-दृष्टि के आधार पर विकसित किया। इसके केंद्र में मनुष्य का समग्र एवं संतुलित विकास है। उनके चिंतन में व्यक्ति को समाज से पृथक तथा समाज को राष्ट्र से अलग करके नहीं देखा जाता। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और व्यापक मानवता के बीच परस्पर संबंध और एकात्मता की भावना महत्वपूर्ण है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद आज के शिक्षा-दर्शन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रस्तुत करता है। यह शिक्षा को केवल ज्ञान, सूचना अथवा रोजगार प्राप्त करने का माध्यम न मानकर शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के संतुलित एवं सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया के रूप में देखने पर बल देता है। वर्तमान समय में शिक्षा के बढ़ते व्यावसायीकरण, प्रतिस्पर्धा, तकनीकी निर्भरता और मूल्य-संकट के बीच एकात्म मानववाद शिक्षा में नैतिकता, मानवीय संवेदना, सामाजिक उत्तरदायित्व, आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक चेतना तथा प्रकृति के प्रति सम्मान को पुनः प्रतिष्ठित करने की दिशा प्रदान करता है।

आधुनिक शिक्षा में विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान के साथ मानवीय मूल्यों का समन्वय, विद्यार्थी के व्यक्तित्व का समग्र विकास तथा व्यक्ति और समाज के बीच संतुलन स्थापित करना आवश्यक है। इस दृष्टि से एकात्म

मानववाद भारतीय संदर्भ में ऐसी शिक्षा-दृष्टि के निर्माण में सहायक हो सकता है जो ज्ञानवान होने के साथ-साथ चरित्रवान, संवेदनशील, उत्तरदायी, आत्मनिर्भर और समाजोपयोगी नागरिकों का निर्माण करे। अतः वर्तमान शिक्षा-दर्शन में एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता उसके मानव-केंद्रित, समन्वयवादी और समग्र विकास के दृष्टिकोण में निहित है।

एकात्म मानववाद पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एक महत्वपूर्ण भारतीय दर्शन है। यह मनुष्य को केवल आर्थिक इकाई न मानकर एक संपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में देखता है। इसका उद्देश्य व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं प्रकृति के बीच समन्वय स्थापित करना है। इस दर्शन के अनुसार वास्तविक विकास वही है, जिसमें समाज के प्रत्येक व्यक्ति को सम्मानपूर्ण जीवन जीने का अवसर प्राप्त हो तथा शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक उन्नति सुनिश्चित हो। एकात्म मानववाद के संदर्भ में मनुष्य के विकास को सामान्यतः शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के संतुलित विकास से जोड़ा जाता है। इस दृष्टिकोण से शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक क्षमता बढ़ाना नहीं, बल्कि संवेदनशील, नैतिक, आत्मनिर्भर, सामाजिक रूप से उत्तरदायी तथा सांस्कृतिक रूप से जागरूक व्यक्ति का निर्माण करना होना चाहिए।

साहित्य समीक्षा

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद पर विभिन्न विद्वानों द्वारा दार्शनिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा शैक्षिक दृष्टि से अध्ययन किए गए हैं। उपलब्ध साहित्य के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि एकात्म मानववाद का मूल आधार मनुष्य के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के संतुलित एवं समग्र विकास की अवधारणा है। वर्तमान समय में इस दर्शन की प्रासंगिकता को विशेष रूप से मूल्य-आधारित शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा, व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास तथा शिक्षा के सांस्कृतिक आधार के संदर्भ में देखा जा रहा है।

1. एकात्म मानववाद के दार्शनिक आधार से संबंधित अध्ययन

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने वर्ष 1965 में प्रस्तुत अपने व्याख्यानों में एकात्म मानववाद को एक समग्र जीवन-दर्शन के रूप में प्रतिपादित किया। इसमें मनुष्य को केवल आर्थिक अथवा भौतिक प्राणी न मानकर शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा से निर्मित समग्र इकाई माना गया है। उनके दर्शन में व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और मानवता के बीच परस्पर संबंध तथा संतुलन पर बल दिया गया है। उपलब्ध अध्ययनों में एकात्म मानववाद को पश्चिमी व्यक्तिवाद तथा भौतिकवादी दृष्टिकोण के विकल्प के रूप में भी विश्लेषित किया गया है।

इसी क्रम में दीनदयाल उपाध्याय के मानवतावादी चिंतन पर किए गए अध्ययनों में उनके सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विचारों का विश्लेषण मिलता है। इन अध्ययनों में मुख्यतः उनके मूल ग्रंथों और लेखन के पाठ-विश्लेषण तथा संदर्भात्मक विश्लेषण का प्रयोग किया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि एकात्म मानववाद केवल राजनीतिक विचारधारा न होकर मानव जीवन के विभिन्न पक्षों को एक-दूसरे से जोड़ने वाला व्यापक दर्शन है।

2. एकात्म मानववाद और शिक्षा के संबंध में अध्ययन

चंडीगढ़/हिमाचल क्षेत्र से प्रकाशित "पंडित दीनदयाल उपाध्याय : एकात्म मानव दर्शन—विविध आयाम" में "वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में दीनदयाल जी की प्रासंगिकता", "एकात्म मानव दर्शन एवं जनजातीय शिक्षा" *तथा* "Rethinking and Rebuilding Effective Educational Road Map in the Context of Integral Humanism" जैसे अध्याय शामिल हैं। इससे संकेत मिलता है कि उपाध्याय के दर्शन को वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था, जनजातीय शिक्षा तथा शिक्षा के पुनर्गठन के संदर्भ में भी देखा गया है।

इन अध्ययनों का प्रमुख जोर शिक्षा को केवल रोजगार प्राप्ति का माध्यम न मानकर व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक

विकास का माध्यम मानने पर है। इस दृष्टिकोण में भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों, आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व को शिक्षा के महत्वपूर्ण उद्देश्यों के रूप में देखा गया है।

3. एकात्म मानववाद और आधुनिक शिक्षा

प्रमिला रमानी (2025) के अध्ययन "Integral Humanism and Its Implications for Modern Education" में एकात्म मानववाद को आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन में समग्र व्यक्तित्व-विकास, मूल्य-आधारित शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा तथा भारतीय ज्ञान परंपरा को एकात्म मानववाद से संबंधित प्रमुख शैक्षिक तत्वों के रूप में रेखांकित किया गया है। अध्ययन में यह भी देखा गया है कि इन विचारों को वर्तमान शैक्षिक सुधारों तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में किस प्रकार समझा जा सकता है।

इसी लेख में दीनदयाल उपाध्याय की शिक्षा संबंधी दृष्टि को भारतीय सांस्कृतिक परंपरा, आत्मनिर्भरता और नैतिक शिक्षा से जोड़ा गया है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि एकात्म मानववाद का शैक्षिक पक्ष आधुनिक शिक्षा में ज्ञान के साथ-साथ चरित्र, मूल्य और सामाजिक उत्तरदायित्व को महत्त्व प्रदान करता है।

4. दीनदयाल उपाध्याय की स्वदेशी शिक्षादृष्टि पर - अध्ययन

प्रमिला रमानी के ही अध्ययन "Deen Dayal Upadhyaya's Vision for an Indigenous Education System" में दीनदयाल उपाध्याय की शिक्षा-दृष्टि को भारतीय ज्ञान एवं सांस्कृतिक परंपरा, मूल्यपरक शिक्षा और आत्मनिर्भरता के संदर्भ में समझाया गया है। अध्ययन में पश्चिमीकरण से प्रभावित शिक्षा व्यवस्था की आलोचना तथा भारतीय संदर्भों के अनुरूप शिक्षा के विकास की आवश्यकता पर चर्चा की गई है।

यह अध्ययन वर्तमान शोध के लिए इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे एकात्म मानववाद के भारतीयकरण, स्वावलंबन, सांस्कृतिक चेतना और मूल्यपरक शिक्षा जैसे आयामों को समझने में सहायता मिलती है।

5. एकात्म मानववाद और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

हाल के अध्ययनों में एकात्म मानववाद तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बीच संबंध पर विशेष ध्यान दिया गया है। 2025 में प्रकाशित एक अध्ययन "Integral Humanism and the New Education Policy 2020: Bridging Holistic Development and Curriculum Reforms" में शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के संतुलित विकास तथा NEP 2020 में बहुविषयक शिक्षा, मातृभाषा, भारतीय ज्ञान परंपरा और मूल्यपरक शिक्षा के बीच संबंधों का अध्ययन किया गया है।

इसी दिशा में 2026 में प्रकाशित "पंडित दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचार एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक तुलनात्मक अध्ययन" में उपाध्याय के शैक्षिक एवं दार्शनिक विचारों तथा NEP 2020 के बीच समानताओं, असमानताओं और संभावनाओं का अध्ययन किया गया है। अध्ययन में भारतीय शैक्षिक परंपरा, स्वदेशी चेतना, मानवीय मूल्य, नैतिकता, बहुभाषिकता, समावेशिता और लचीली शिक्षा जैसे पक्षों पर चर्चा की गई है।इस प्रकार उपलब्ध साहित्य यह संकेत करता है कि वर्तमान शिक्षा-चिंतन में एकात्म मानववाद को भारतीय ज्ञान परंपरा और समग्र विकास की दृष्टि से पुनः समझने का प्रयास किया जा रहा है।

6. विद्यालयी पाठ्यक्रम और समग्र विकास से संबंधित नवीन अध्ययन

2026 के एक अध्ययन "Operationalising Integral Humanism for Holistic Development in School Education: A Curriculum Perspective" में एकात्म मानववाद को विद्यालयी पाठ्यचर्या के स्तर पर लागू करने की संभावना का अध्ययन किया गया है। इसमें शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के विकास को पाठ्यचर्या तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से जोड़ने का प्रयास किया गया है। अध्ययन में एकात्म मानववाद और NEP 2020

के समग्र शिक्षा संबंधी उद्देश्यों के बीच वैचारिक संबंध स्थापित किया गया है।

यह अध्ययन वर्तमान शोध के लिए विशेष रूप से उपयोगी है, क्योंकि इससे यह स्पष्ट होता है कि एकात्म मानववाद पर शोध केवल सैद्धांतिक या दार्शनिक विमर्श तक सीमित नहीं है, बल्कि पाठ्यचर्या और शैक्षिक व्यवहार के स्तर पर भी इसके अनुप्रयोग की संभावनाओं का अध्ययन किया जा रहा है।

7. एकात्म मानववाद की समकालीन प्रासंगिकता

2026 में प्रकाशित एक अध्ययन "The Relevance of Integral Humanism of Pandit Deendayal Upadhyaya in the 21st Century" में एकात्म मानववाद की 21वीं सदी में प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है। इसमें भौतिक विकास के साथ मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास तथा भारतीय संदर्भ में विकास की अवधारणा पर बल दिया गया है।

इसी प्रकार 2026 में प्रकाशित "Educational Thought of Pandit Deendayal Upadhyaya and Its Relevance to Indian Education in the Twenty-First Century" में उनके शैक्षिक विचारों को वर्तमान भारतीय शिक्षा, वैश्वीकरण, तकनीकी परिवर्तन तथा NEP 2020 के संदर्भ में देखा गया है। अध्ययन में शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या, शिक्षक-शिक्षार्थी संबंध, व्यावसायिक शिक्षा, महिला शिक्षा तथा विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा जैसे पक्षों को भी शामिल किया गया है।

शोध-पत्र के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद के मूल सिद्धांतों का अध्ययन करते हुए वर्तमान शिक्षा-दर्शन के संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण करना है। इस व्यापक उद्देश्य की पूर्ति के लिए निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं—

1. पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद की मूल अवधारणा एवं दार्शनिक आधार का अध्ययन करना।
2. एकात्म मानववाद में निहित शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के समन्वित विकास की अवधारणा का शैक्षिक दृष्टि से विश्लेषण करना।
3. दीनदयाल उपाध्याय के शिक्षा संबंधी विचारों एवं उनके प्रमुख शैक्षिक उद्देश्यों का अध्ययन करना।
4. एकात्म मानववाद में निहित नैतिक, मानवीय, सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों का वर्तमान शिक्षाके संदर्भ में विश्लेषण करना। दर्शन-
5. व्यक्ति के सर्वांगीण व्यक्तित्वविकास के संदर्भ - में एकात्म मानववाद की शैक्षिक प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

समस्या का औचित्य

वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास, वैश्वीकरण, बाजारीकरण तथा बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने शिक्षा के उद्देश्यों और स्वरूप को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। आज शिक्षा से ज्ञान एवं कौशल प्राप्त करने के साथ-साथ रोजगार, आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक गतिशीलता की अपेक्षा की जाती है। इसके परिणामस्वरूप शिक्षा के नैतिक, मानवीय, सांस्कृतिक तथा व्यक्तित्व-विकास संबंधी उद्देश्यों पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिए जाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। ऐसी परिस्थिति में ऐसी शिक्षा-दृष्टि की आवश्यकता है जो व्यक्ति के समग्र विकास के साथ-साथ उसके सामाजिक एवं नैतिक उत्तरदायित्व को भी महत्त्व प्रदान करे।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद मनुष्य को केवल आर्थिक या भौतिक इकाई के रूप में न देखकर उसके शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के समन्वित विकास पर बल देता है। यह दर्शन व्यक्ति और समाज के बीच परस्पर संबंध, नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व, सांस्कृतिक चेतना तथा समग्र

मानव-विकास को महत्त्व देता है। इस दृष्टि से एकात्म मानववाद के सिद्धांत वर्तमान शिक्षा-दर्शन में व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की अवधारणा के साथ संवाद स्थापित करने की संभावनाएँ प्रस्तुत करते हैं।

इस प्रकार, प्रस्तुत शोध का औचित्य "पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद की आज के शिक्षा-दर्शन में प्रासंगिकता" के विश्लेषण के माध्यम से ऐसी शिक्षा-दृष्टि की संभावनाओं को समझने में है, जो ज्ञान और कौशल के साथ-साथ व्यक्ति के नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं मानवीय विकास को भी महत्त्व प्रदान करती है।

आज के शिक्षा-दर्शन में एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता

1. शिक्षा में सर्वांगीण विकास की अवधारणा

वर्तमान शिक्षा-दर्शन में विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास पर विशेष जोर दिया जा रहा है। आज शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में संज्ञानात्मक, भावात्मक, सामाजिक, नैतिक तथा रचनात्मक क्षमताओं का विकास करना भी है।

एकात्म मानववाद का समग्र मानव-विकास संबंधी दृष्टिकोण इस विचार को दार्शनिक आधार प्रदान करता है। इसके अनुसार विद्यार्थी के शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन, बौद्धिक क्षमता, नैतिक चेतना तथा आत्मिक विकास के बीच संतुलन आवश्यक है। इसलिए आधुनिक शिक्षा में 'समग्र व्यक्तित्व विकास' की अवधारणा एकात्म मानववादी चिंतन से सार्थक रूप से जुड़ती है।

2. मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता

आधुनिक समाज में तकनीकी एवं आर्थिक विकास के साथ अनेक नैतिक और सामाजिक चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। प्रतिस्पर्धा, उपभोक्तावाद, व्यक्तिवाद तथा भौतिक सफलता की बढ़ती आकांक्षा के कारण विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों और सामाजिक संवेदनशीलता को विकसित करना शिक्षा की महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गई है।

एकात्म मानववाद शिक्षा को व्यक्ति के चरित्र-निर्माण से जोड़ता है। सत्य, कर्तव्य, अनुशासन, सहयोग, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा मानव-मर्यादा जैसे मूल्यों को शिक्षा के माध्यम से विकसित किया जा सकता है। इस दृष्टि से मूल्यपरक शिक्षा के वर्तमान उद्देश्य के संदर्भ में एकात्म मानववाद उपयोगी आधार प्रस्तुत करता है।

3. भारतीय संस्कृति और शिक्षा का संबंध

एकात्म मानववाद भारतीय सांस्कृतिक दृष्टिकोण से प्रेरित है। यह शिक्षा में स्थानीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों के महत्व को समझने की प्रेरणा देता है। वर्तमान समय में शिक्षा को स्थानीय ज्ञान, भारतीय भाषाओं, लोक परंपराओं, कला, संस्कृति और सामाजिक अनुभवों से जोड़ने पर बल दिया जा रहा है।

इस दृष्टि से शिक्षा केवल बाहरी ज्ञान का अनुकरण करने के बजाय विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से परिचित कराने का माध्यम बन सकती है। इससे विद्यार्थियों में सांस्कृतिक चेतना तथा अपनी परंपरा के प्रति समझ विकसित हो सकती है।

4. व्यक्ति और समाज के बीच संतुलन

आधुनिक शिक्षा में व्यक्तिगत उपलब्धि और प्रतियोगिता को काफी महत्व मिलता है। किंतु समाज के विकास के लिए व्यक्ति में सहयोग, सह-अस्तित्व और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना भी आवश्यक है।

एकात्म मानववाद व्यक्ति और समाज को परस्पर विरोधी न मानकर एक-दूसरे के पूरक के रूप में देखता है। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में यह भावना विकसित की जा सकती है कि व्यक्तिगत विकास के साथ-साथ समाज के प्रति भी उनकी जिम्मेदारियाँ हैं। इससे शिक्षा अधिक सामाजिक और उत्तरदायित्वपूर्ण बन सकती है।

5. शिक्षा और आत्मनिर्भरता

वर्तमान समय में कौशल विकास, व्यावसायिक शिक्षा और रोजगारपरक शिक्षा को विशेष महत्व प्राप्त

हुआ है। एकात्म मानववाद के संदर्भ में आत्मनिर्भरता का विचार व्यक्ति की क्षमता, श्रम और स्थानीय संसाधनों के सम्मान से जुड़ता है।

इसलिए शिक्षा में कौशल विकास, उद्यमिता, व्यावसायिक दक्षता, स्थानीय व्यवसायों और उत्पादक कार्यों को महत्व देना विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने में सहायक हो सकता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्त करना न होकर स्वरोजगार एवं समाजोपयोगी कार्यों के लिए सक्षम बनाना भी हो सकता है।

6. शिक्षा में मानवीय संवेदना

तकनीकी एवं डिजिटल युग में शिक्षा के स्वरूप में तेजी से परिवर्तन हुआ है। ऑनलाइन शिक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल संसाधन और सूचना प्रौद्योगिकी ने सीखने के नए अवसर उपलब्ध कराए हैं। किंतु तकनीकी दक्षता के साथ मानवीय संवेदनशीलता बनाए रखना भी आवश्यक है।

एकात्म मानववाद तकनीकी विकास को मनुष्य से ऊपर नहीं रखता, बल्कि मानव-केंद्रित विकास पर बल देता है। अतः आधुनिक शिक्षा में तकनीकी ज्ञान के साथ सहानुभूति, सहयोग, संवेदनशीलता और मानवीय संबंधों के विकास को भी स्थान दिया जाना आवश्यक है।

7. प्रकृति और पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व

आज पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन और जैव-विविधता का संकट गंभीर वैश्विक चुनौतियाँ हैं। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना विकसित करना आवश्यक है।

एकात्म मानववाद के समग्र दृष्टिकोण में मनुष्य को व्यापक सामाजिक एवं प्राकृतिक व्यवस्था से अलग करके नहीं देखा जाता। इस दृष्टि से शिक्षा विद्यार्थियों में प्रकृति के प्रति सम्मान, संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग और पर्यावरण संरक्षण की भावना विकसित कर सकती है।

8. शिक्षा में समान अवसर

एक स्वस्थ शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग तक शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित करना है। आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक अथवा अन्य परिस्थितियों के कारण शिक्षा से वंचित विद्यार्थियों को समान अवसर उपलब्ध कराना आधुनिक शिक्षा-दर्शन की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद वर्तमान शिक्षा-दर्शन में व्यक्ति के समग्र विकास, मूल्यपरक शिक्षा, सामाजिक उत्तरदायित्व, आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक चेतना, पर्यावरणीय संवेदनशीलता तथा मानव-केंद्रित विकास के संदर्भ में महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत करता है। आज जब शिक्षा तेजी से तकनीकी, प्रतिस्पर्धात्मक और रोजगारोन्मुख हो रही है, तब शिक्षा के मानवीय एवं नैतिक पक्ष को मजबूत करना आवश्यक है।

एकात्म मानववाद शिक्षा को केवल ज्ञान और कौशल प्राप्त करने की प्रक्रिया न मानकर व्यक्ति, समाज और व्यापक जीवन-जगत के बीच संतुलित संबंध स्थापित करने वाली प्रक्रिया के रूप में देखने की प्रेरणा देता है। इस दृष्टि से इसके विचार आधुनिक शिक्षा के उद्देश्यों के साथ संवाद स्थापित कर सकते हैं और भारतीय संदर्भ में ऐसी शिक्षा की कल्पना को आधार दे सकते हैं जो ज्ञानवान होने के साथ-साथ संवेदनशील, उत्तरदायी, आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से उपयोगी नागरिकों के निर्माण में सहायक हो।

इस प्रकार, वर्तमान शिक्षा-दर्शन में एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता मुख्यतः उसके 'समग्र मानव विकास' और 'मानव-केंद्रित शिक्षा' के दृष्टिकोण में निहित है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. शर्मा, महेश चंद्र. (2007). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: संपूर्ण वाङ्मय. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।

2. चतुर्वेदी, बद्रीनारायण (2009). दीनदयाल उपाध्याय और एकात्म मानववाद. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।

3. भारतीय विद्या भवन (2013). भारतीय दर्शन एवं शिक्षा के विविध आयाम. मुंबई: भारतीय विद्या भवन।

4. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली (2014). भारतीय दर्शन. नई दिल्ली: राजपाल एंड संस।

5. अरविंद, श्री (2015). शिक्षा पर श्री अरविंद. पुदुच्चेरी: श्री अरविंद आश्रम।

6. गांधी, महात्मा (2017). बेसिक एजुकेशन. अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन मंदिर।

7. तिलक, बाल गंगाधर (2019). श्रीमद्भगवद्गीता रहस्य. पुणे: केसरी प्रकाशन।

8. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।

9. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2020). National Education Policy 2020. नई दिल्ली: भारत सरकार।

10. University Grants Commission. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में उच्च शिक्षा के पुनर्गठन से संबंधित दस्तावेज. नई दिल्ली: UGC